वाणी का रस

हरिदास
वरिष्ठ संदेशवाहक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

वाणी एक ऐसी नायाब चीज है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक साथ निभाती है। इन्सान के अच्छा या बुरा होने का आभाष भी वाणी ही कराती है । वाणी से निकले शब्द गोली से भी तेज असर रखते हैं । तभी किसी विद्वान ने कहा है कि पहले तोलो सोचो विचारो फिर बोलो । इन्सान की वाणी से निकले शब्द कई बार उसे असहाय स्थिति में लाकर खड़ा कर देते हैं ।

एक बार की बात है एक महाशय को कहीं दूर सफर पर जाना पड़ा, उसने अपनी पत्नी से कहा सफर बड़ा लम्बा है रास्ते में भूख तो लगेगी ही - अच्छा है रास्ते के लिए थोड़े गेहूँ, चावल कपड़े में बाँध दो उस जमाने में संचार के साधन इतने विकसित नहीं थे । ज्यादातर पैदल ही जाना पड़ता था । वह महाशय सफर पर निकल पड़े । रास्ते में एक गाँव में रात बितानी पड़ी उस गाँव का एक भला आदमी उन्हें अपने घर ले गया। महाशय ने अपनी ईमानदारी दिखाते हुए कहा कि मेरे पास गेहुं और चावल हैं आप मुझे बस दलिया ही बनवा दो । पर घर में उस सज्जन को अकेला देख कर पूछा आप अकेले ही हैं घर परिवार , बच्चे नहीं हैं । उस सज्जन पुरूष ने कहा दो बेटे हैं , पत्नी का कुछ समय पहले स्वर्गवास हो गया है । इतना कहकर वह दलिया बनाने चला गया । वह महाशय उसके पीछे-पीछे जाकर पूछने लगे " बेटे क्या करते हैं ?" सज्जन ने कहा एक बेटा फौज में है..... । सज्जन यह सुनकर बोले " अरे यह तो बहुत बुरी बात है अगर फौज में वह मर मरा गया तो " सज्जन पुरूष ने

थोड़ा गुस्से में कहा वाणी सम्भालकर बोलिए - थोड़ी देर बाद महाशय पूछने लगे तुम्हारा दूसरा बेटा..... ?" सज्जन ने कहा वह खेती करता है रात में खेतों की रखवाली करता है महाशय बोला "अरे-रे-रे अकेला रखवाली कहीं जंगली जानवर उसे नोच ले तो ....।" उस सज्जन को बड़ा गुस्सा आया। उसने गर्म-गर्म दलिया उसकी झोली में डालकर कहा " अभी मेरे घर से निकल जाइये.....।" जब वह मुसाफिर गाँव से गुजर रहा था तो किसी ने टोका "आपकी झोली से कुछ नीचे टपक रहा है, क्या है? महाशय बोले यह वाणी का रस टपक रहा है ।"